International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 920-922

कबीर : एक समाज सुधारक के रूप में

उपासना
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गौड़ ब्राह्मण महाविद्यालय, हरियाणा, भारत।

सारांश
"कबीर एक युगद्रष्टा तथा क्रांतिकारी कवि थे। राजनैतिक वातावरण में सजीव सामाजिक और धार्मिक सिद्धान्तों के प्रवर्तक कबीर ने प्राचीन मान्यताओं का खण्डन किया और समाज में परिवर्तन की धारा को प्रवाहित किया था। कबीर ने ज्ञान के हाथी पर चढ़कर सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्औतिक चेतना जागृत करने का प्रयत्न किया।" कबीरदास को समाज से घृणा, तिरस्कार, अपमान और अवहेलना ही मिली। कबीर एक विद्रोही कवि बन गए। उन्होंने समाज की रूढ़ियों तथा आडंबरों का विरोध किया।

मूल शब्द : सामाजिक व्यवस्था, अन्धविश्वास, वर्ण व्यवस्था, घृणा और वैर भावना

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध-आलेख सामाजिक यथार्थ से जुड़ी समस्याओं पर आधारित है। इस शोधपत्र में कबीर के उद्भव व विकास के सभी तथ्यों को उजागर किया गया है। कबीर का उद्भव जिस युग, समाज और वातावरण में हुआ था, वह समाज चारों तरफ से भेदभाव, अन्धविश्वास, वर्ण व्यवस्था, घृणा और वैर भावना जैसी अनेक ऐसी कुरीतियों से घिरा हुआ था। चारों और पाखण्ड का राज था। अपने-अपने धर्म को बढ़ावा देने वाले लोगों ने समाज व जीवन को पथभ्रष्ट कर दिया था। सारा समाज दूषित हो रहा था। कर्म से ही लोगों को सम्मान मिल रहा था। एक तरफ नीच कर्म करने वाले ब्राह्मण को दर्जा देते थे तो दूसरी और उच्चतम कर्म करने वाले शूद्र को उच्च निम्न ही समझा जाता था।

कबीर-कालीन सामाजिक व्यवस्था काफी कुरूप हो चुकी थी। जिन सिद्धान्तों तथा नियमों की रचना, धर्म और समाज की रक्षा के लिए की गई थी, वही नियम और सिद्धान्त उनके विनाश के कारण बनते जा रहे थे। धर्म की आत्मा उसके शरीर को छोड़ कर चली गयी थी लेकिन समाज के लोग पुरानी व्यवस्था और प्राचीन मान्यताओं को अपने कलेजे से चिपकाए हुए थे। जो भगवान निर्बल का बल होता था, वह राम अब धनी वर्ग के लोगों व पाखंडियों के हाथों की कठपुतली सा बन गया था। जनसाधारण गरीबी, भुखमरी व धार्मिक आडंबरों में फँसता जा रहा था। कबीर ने लोगों के दुःखों को स्वार्थ अनुभव किया। वे लोगों के दुःखों का निदान खोजने की चिंता में जागते थे, रोते थे परंतु संसार मस्त होकर खाता था, सोता था।

"दुखिया दास कबीर है जागे और रोवे।
सुखिया सब-संसार है खावे और सोवे '"

कबीरदास एक क्रांतिकारी के रूप में समाज के आए और उन्होंने पाखंडियों तथा धोखेबाजों की पोल खोलकर रख दी। डॉ° हरिहर त्रिवेदी तथा दो मण्डल त्रिवेदी ने लिखा है -

"कबीर एक युगद्रष्टा तथा क्रांतिकारी कवि थे। राजनीतिक वातावरण में नवीन सामाजिक और धार्मिक सिद्धान्तों के प्रवर्तक कबीर ने प्राचीन मान्यताओं का खण्डन किया और समाज में परिवर्तन की धारा को प्रवाहित किया था। कबीर ने ज्ञान के हाथी पर चढ़कर सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्औतिक चेतना जागृत करने का प्रयत्न किया।"

कबीरदास को समाज से घृणा, तिरस्कार, अपमान और अवहेलना ही मिली। कबीर एक प्रसिद्ध कवि बन गए। उन्होंने समाज की रूढ़ियों तथा आडंबरों का विरोध किया।

कबीर ने हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों जाति को फटकार लगाई -

"हिन्दु की हिन्दुआई देखी, तुरकन की तुरकाई।
अरे इन दोऊन यह न माई।"
जो तू तुरूकति जाया।
तो भीतर खसना क्यों नहीं कराया।
जो तू ब्राह्मण ब्राह्मणी जाया।
तो आन वाट से क्यों नहीं आया।"

कबीरदास जी ने समाज में प्रचलित जातिगत भेदभाव का डटकर विरोध किया। उन्होंने हिन्दुओं तथा मुसलमानों के भेदभाव को अस्वीकार कर दिया। उनका मानना था कि संसार में मानव जाति ही एकमात्र जाति है। सभी मनुष्य बराबर है, कोई ऊँचा नहीं, कोई नीचा नहीं। पण्डित हो चाहे, मुसलमान, उन्होंने दोनों को ही आड़े हाथों लिया। वे दोनों को फटकार लगाते हुए कहत हैं :-

"हिन्दू अपनी करे बड़ाई गागर छुवन न देई।
वैस्यो के पाइन तर सौवे यह देखो हिंदुआई '
मुसलमान की पीर औलिया मुर्गी मुर्गा खाई।
बाला केरी बेटी ब्याहै घरहि में करै सगाई '"

कबीरदास आरंभ से ही मिथ्या आडंबरों के विरोधी थे। वे सत्य को सहज ढंग से कहते थे। जब उन्होंने समाज में बाह्य आडंबरों, रूढ़ियों तथा जन परम्पराओं को देखा तो उनकी आत्मा विद्रोह कर उठी। कबीर की वाणी में तीखा व्यंग्य था। उन्होंने समाज पर जो तीखे व्यंग्य किए हैं

वे समाज की गंदगी तथा क्रूरता को दूर करने के लिए किए हैं। कटु आलोचना करते समय उन्होंने न तो हिन्दुओं को बख्शा और न मुसलमानों को। कबीर ने अनुभव किया कि कोई किसी की नहीं सुनता, सभी झूटे आडंबरों के पीछे भाग रहे हैं। किसी के आचरण में शुद्धि नहीं है। इसलिए वे कहते हैं :-

"एक सन भूला दोइ न भूला, भूला सब संसारा।
एक न भूला दास कबीरा, जाके राम अधारा '"

निम्न वर्ग कट्टर ब्राह्मणों के अत्याचारों से पिस रहा था। कोई भी उनका स्पर्श नहीं करता था, जिसके कारण निम्न वर्ग दीन-हीन दशा को व्यतीत करने के लिए मजबूर था। कबीर ने इस वर्ग को पंडितों के प्रपंच से मुक्त किया। एक स्थान पर वे पंडितों से पूछते भी है कि वह किस दृष्टि से शूद्रों से श्रेष्ठ है :-

"काहे को कीजै पंडित छोति विचारा।
छोतहि ते उपजा संसारा।
हमारै कैसे लोहू तुम्हारे कैसे दूध।
तुम्है ब्राह्मण पांडै हम कैसे सूद।
छोति छोति करत तुम्ह ही जाए।
तो गर्भवास काहे को आए।"

समाज के सभी लोग अंधविश्वासों से जकड़े हुए थे। धर्म की ओट में हिन्दू और मुसलमान दोनों एक दूसरे से लड़ रहे थे। कबीर ने दोनों ही धर्म के अंधे लोगों के अंधविश्वासों पर कठोर प्रहार किया है:-

दुनिया ऐसी बावरी पाथर, पूजन जाए।
घर की चकिया कोई न पूछै, जेहि का पीसा खाए।

दिन भर रोजा रहत है, रात हनत दे गाय।
यह तो खून व बंदगी, कैसे खुशी खुदाय '"

कबीर ने मनुष्य और मनुष्य के मध्य भेद करने वाली बड़ी से बड़ी शक्ति का विरोध किया। कबीर ने उच्चतर मानव मूल्यों की परिकल्पना की जिसे इनको आध्यात्मिक चेतना कहा जाता है। कई में रहस्यवाद की झलक भी है। कबीर ने विवेक और प्रेमभाव पर भी बल दिया -

"पोथी पढि-पढि जग मुआ, पंडित भवा न कोय।
ढाई आखर प्रेम के पढ़ै सो पंडित होय '"

कबीर ने अपने जीवन में दूसरों के लिए कष्ट को स्वीकार किया था। उनका जीवन जनता के उद्‌बोधन में ही व्यतीत हुआ। उन्होंने सांई के सब जीवों के लिए अपना अस्तित्व समर्पित कर दिया था। संसार के लिए उन्होंने अपने आप को मिटा दिया था।
कबीर ने ढोंग और आडंबरों का सदैव विरोध किया। उन्होंने उन साधुओं को भी नहीं छोड़ा जो माला-तिलक लगाते हैं, दाढ़ी-मूँछ मुंडवाते हैं और सिर के बाल कटवा कर लोगों को धोखा देते हैं। साधुओं को फटकारते हुए वे कहते हैं :-

"माला तिलक लगाई के भक्ति न आई हाथ।
दाढ़ी मूंछ मुडाई कै, चलै दुनी के साथ '
दाढ़ी मुडाई कै, हूहा घोटम घोट।
मन को क्यों नहीं मूडिये, जा के भरिया खोट।"

कबीर जी सहज में आस्था रखने वाले व्यक्ति थे। उनका लगाव किसी रूढ़ि या अंध मर्यादा से नहीं था। कबीर ने जातिवाद और ऊँच-नीच के भेदभावों के विरूद्ध आवाज उठाई। वे बाहरी शुद्धता की अपेक्षा मन की शुद्धता पर जोर देते हुए कहते हैं :-

"केसो कहा बिगारियो, जो मूड़ौ सौ बार।
मन को क्यों नहीं मूडिये, जा में विषै विकार '"

कबीर ने अपने साहित्य में जन-साधारण को सरल सात्विक जीवन, सत्याचरण तथा पारस्परिक एकता की प्रेरणा दी। सामाजिक शोषण, अनाचार और अन्याय के विरूद्ध संघर्ष में आज भी कबीर का काव्य तीखा अस्त्र है। कबीर से हम रूढ़िगत सामन्ती, दुराचार और अन्याय पूर्ण सामाजिक व्यवस्था के विरूद्ध डटकर लड़ना सिखते है। कबीर आजीवन मन, वचन, कर्म की शुद्धता पर बल देते रहे। वे आचरणशील चरित्र को ही सबसे बड़ा और धनवान मानते हैं :-

"सीलवन्त सबसे बड़ा सब रतनन की खानि।
तीन लोक की संपदा, रही सील में आनि '"

कबीर अहिंसा के समर्थक और लोकजन के हिमायती थी, इस संसार के छोटे-बड़े सभी जीव परमात्मा द्वारा बनाए गए है। इन जीवों के प्रति दया और करूणा का भाव होना चाहिए। जीवों के प्रति हिंसा का भाव कबीर के लिए असह्य था। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि हिंसा करने वाले उन्हें अप्रिय है तथा अहिंसक वैष्णव उन्हें प्रिय है। प्रेम आन्तरिक गुण है, आरोपित नहीं। सच्चे समर्पण के भाव से ही मनुष्य के अन्दर प्रेम जागृत होता है -

"प्रेम न खेती उपजै प्रेम न हाट विकाय।
राजा प्रजा जिस रूचै सिर दे सौ ले जाए।"

कबीर ने जिस प्रेम को हासिल किया था, वह बहुत कठिन था। वे लोक चेतना को जिस रूप में ढालना चाहते थे, जिस नए समाज एवं जीवन की कल्पना उन्होंने की थी, वे उनके समय की समस्त रूढ़ियों के खिलाफ थी। वे फिर भी आजीवन इन शक्तियों से लड़ते रहे।
कबीर ने तीर्थ, व्रत, पूजा आदि का भी खुलकर विरोध किया। उन्होंने इसे गुड़ियों का खेल कहा -

"पूजा, सेवा, नेम, व्रत, गुडियन का-सा खेल।
जब लग लिउ परसै नहीं, तब लग संसय मेल '"

कबीर ने योगियों तथा हठयोग की साधना करने वालों को सुधारने का प्रयास किया। इसलिए उन्होंने एक नवीन मार्ग चलाया और साधना पर बल दिया।

"सहज, सहज सब ही कहै, सहज न चीन्है कोय।
जो कबीर विषया तजै, सहज कहीजै सोय।"

कबीर सतर्क रूप क्षेत्र में समाज की कुरीतियों के विरोध में खड़े दिखाई देते हैं। वे पुनर्जन्म, कर्मफल और जन्म-जन्मांतर के घोर विरोधी थे। कबीर धर्म परिवर्तन के घोर विरोधी थे। कबीर ने समाज में फैली सभी बुराइयों व विसंगतियों को दूर करने और जनता को एकसूत्र में बांधकर सही राह दिखाने का प्रयास किया। कबीर एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जिससे जातिवाद और पाखंडवाद को दूर किया जा सके। वे एक आदर्श समाज की स्थापना करना चाहते थे जिससे करूणा, दया, सहानुभूति, उदाहरण आदि उदात्त गुणों का समावेश हो। उन्होंने समाज की पुरानी प्रथा को न केवल तोड़ा, बल्कि हमें समाप्त कर दिया। कबीरदास क्रांतिकारी कवि होने के साथ-साथ एक जागरूक कवि भी थे जो प्रेम का संदेश बांटते हुए लोगों को जागरूक कर रहे थे। इस दृष्टि से कबीर जी राष्ट्रीय एकत्व और लोकचेतना का महान सूत्रधार कहा जा सकता है।

संदर्भ

1. आ° हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर, पृ° 259
2. डॉ° श्याम सुन्दरदास (सं°), कबीर ग्रंथावली, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आ° रामचन्द्र शुक्ल
4. डॉ° पुष्पपाल सिंह, कबीर ग्रंथावली, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ° 76
5. डॉ° रामकुमार वर्मा, कबीर का रहस्यवाद
6. (डॉ°) राहुल, कबीर आधुनिक संदर्भ में, दिल्लीः श्री नटराज प्रकाशन, सन् 2009, पृ° 60
7. डॉ° पुष्पपाल सिंह, कबीर ग्रंथावली, नमन प्रकाशन दिल्ली, 2010, पृ° 75
8. डॉ° शिवकुमार शर्मा (सं°), कविता लोक, पृ° 12, 13
9. कबीर दास, कबीर-बीजक
10. शिवकुमार शर्मा (सं°) कविता लोक, पंजाब युनिवर्सिटी पब्लिकेशन ब्यूरो, चण्ड़ीगढ़, सन्, 2012, पृ° 14
11. आ° हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर, पृ° 251
12. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आ°, रामचन्द्र शुक्ल
13. डॉ° नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास
14. बाबू गुलाब राय, हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास
15. डॉ° द्वारिका प्रसाद सक्सेना, हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि